

सुनहरी की पहिया कुर्सी

भारती कौशिक*

याशु गांधी**

प्रत्येक मनुष्य की अपनी कुछ विशिष्टताएँ होती हैं। प्रकृति ने प्रत्येक मनुष्य को एक जैसा तो बनाया है परंतु कार्यों को करने की क्षमता सभी में भिन्न है, भिन्नता ही विशिष्टता है। हमारे आसपास, हमारे बीच कुछ ऐसे व्यक्ति हैं जिनमें सभी आम मनुष्यों की तरह ही भावनाएँ एवं संवेदनाएँ हैं जो हमारी ही तरह सोचते और व्यवहार करते हैं, परंतु उनकी आवश्यकताएँ विशिष्ट परिस्थितियों के चलते भिन्न होती हैं। इसका अर्थ यह नहीं है कि वे परिस्थितियों का सामना नहीं कर सकते, बस उन्हें उचित अवसरों और सुविधाओं को प्रदान करने भर की देर है। परिस्थितियों को देखना और उसका आकलन करना केवल हमारे नज़रिये पर निर्भर करता है। सुनहरी की कहानी ऐसी ही कुछ विशिष्ट आवश्यकताओं पर ध्यान आकर्षित करती है कि यदि हम अपने आसपास के वातावरण को सुविधाजनक और सुगम्य बनाएँ तो प्रत्येक के लिए सहजता संवर्धन होगी। जिस तरह एक पौधे को उचित वातावरण और विकास करने की अनुकूल परिस्थितियाँ प्रदान करने पर वह एक मज़बूत, छायादार वृक्ष बनता है, वही स्थिति बालमन की भी होती है। परिस्थितियों के आधार पर उत्पन्न विशेष आवश्यकता वाले बच्चों को यदि उनके आसपास का सहज-सुलभ वातावरण और उनकी आवश्यकतानुरूप अवसर दिया जाए तो वे भी स्वावलंबी बनेंगे और अपनी प्रतिभा और क्षमता का सही दिशा में उपयोग कर सकेंगे। ऐसे बच्चों को दया या करुणाभाव की आवश्यकता नहीं अपितु उनके लिए परिस्थितियों को सहज और अवसरों को सुलभ करने की आवश्यकता है। उन्हें अपनी प्रतिभा दिखाने और उसको मुखरित करने के लिए केवल और केवल अवसरों की आवश्यकता है। ऐसा तभी संभव है जब हम विशेष आवश्यकता वाले बच्चों की ज़रूरतों के विषय में जागरूक हों और इस दिशा में उचित प्रयास करें व अपने दृष्टिकोण को नयी दृष्टि से देखें।

किसी भी परिस्थिति को देखना और उसका आकलन करना इस बात पर निर्भर करता है, कि हमारा किसी स्थिति विशेष को देखने का नज़रिया क्या है। हमारी सोच बहुत हद तक हमारी शिक्षा, पारिस्थितिकी और अनुभव के आधार पर बनती है। मात्र किताबी शिक्षा हर समस्या का समाधान नहीं...

शिक्षा हमें सभ्य बनाती है और हमारी सोच को भी विकसित करती है... इसलिए सुनहरी के माध्यम से एक छोटा-सा प्रयास है, सभी का विशेष आवश्यकता वाले लोगों की स्थितियों की तरफ़ ध्यानाकर्षण का ...ताकि न केवल व्यवस्थागत जागरूकता आए... बल्कि इस बदलाव की कोशिश दिल से हो। कहते

* एसोसिएट प्रोफ़ेसर, सी.आई.ई.टी., रा.शै.अ.प्र.प., नयी दिल्ली

** असिस्टेंट, सी.आई.ई.टी., रा.शै.अ.प्र.प., नयी दिल्ली

हैं, जब किसी पौधे को आवश्यकतानुरूप नमी, गर्मी और पोषण मिले तो उसका पूर्णतः विकास सुनिश्चित होता है, कुछ यही प्रक्रिया बालमन की भी होती है।... यदि बचपन से हम उन्हें आसपास के वातावरण और लोगों के प्रति सहृदय बनाएँ तो वे बड़े होकर समाज की एक ऐसी कड़ी बनकर उभरेंगे जो हर दृष्टिकोण से समाज को मज़बूत बनाएँगे। वहीं दूसरी तरफ़ जिन्हें कुछ सुविधाओं की आवश्यकता है, उन्हें भी बिना किसी संकोच के आगे आना होगा।

जीवन का हर उगता सूरज आपको एक विशिष्ट स्थिति से जोड़कर नयी दिशा का आगाज़ करता है, फ़र्क बस हमारे नज़रिए का होता है। अगर सोच सकारात्मक हो और हम आशा और ऊर्जा से लबरेज़ हों जैसे हमारी कहानी की नायिका सुनहरी है, तो हर परिस्थिति में खुशी से जीना सीख जाते हैं। सुनहरी अपने पैरों पर चल नहीं सकती, इसलिए उसे एक ऐसी कुर्सी पर हमेशा बैठे रहना होता है, जिसमें पहिये लगे हैं, और अब वह सुनहरी की पहिया कुर्सी बन गई है, ठीक वैसे ही जैसे हम अपने-अपने गंतव्य तक पहुँचने के लिए अपने पहिया वाहनों का इस्तेमाल करते हैं, बल्कि यूँ कहें कि उस पर निर्भर हैं, तो कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी।

आइए, आपको भी मिलवाते हैं सुनहरी से और देखते हैं कि कैसे वह बाज़ार का सारा काम कर पाती है, अपनी पहिया कुर्सी से। आज का दिन बहुत ही खास है, क्योंकि आज सुनहरी को अपनी पहिया कुर्सी से अकेले बाज़ार जो जाना है। घड़ी में 7 बज रहे हैं सुनहरी अभी-अभी जगी है, और अपने बिस्तर पर लेटी है, वह सोच रही थी कि आज उसे क्या-क्या काम करने हैं, उसे याद आया कि आज तो उसे बाज़ार जाना है, सोचते ही उसकी आँखों में चमक आ गई। सुनहरी आज अकेले बाज़ार जाने वाली थी।

सुनहरी ने अपने मौजे, जूते पहने और जल्दी से तैयार होकर अपनी पहिया कुर्सी पर बैठ गई। मेज पर नाश्ता लगा हुआ था, सुनहरी नाश्ता करने लगती है।

सुनहरी— माँ, अचार की बोतल पकड़ाना तो।

सुनहरी की माँ (रसोई से बोलते हुए)— अलमारी में रखी है, ले लो।

सुनहरी खुद जाकर अचार ले आई।

सुनहरी— माँ, बाज़ार से क्या-क्या लाना है?

सुनहरी की माँ— एक किलो चीनी लानी है, एक बोतल शरबत और दो किलो आलू भी, पर क्या तुम अकेले सब ला पाओगी?

सुनहरी— पक्का... यह कहते हुए सुनहरी ने माँ से झोला और रुपये लिए और अपनी पहिया कुर्सी से बाज़ार की ओर चल दी...।

रास्ते में पार्क में बच्चे खेल रहे थे, कुछ बच्चे रस्सी कूद रहे थे, कुछ बच्चे गेंद खेल रहे थे, खेल के मैदान के कोने में एक लड़की अपनी माँ के साथ खड़ी थी, और सुनहरी की तरफ़ ही लगातार देख रही थी। खेल के ही मैदान में कुछ बच्चे मिलकर एक छोटे कद के बच्चे को छोटू-छोटू कहकर चिढ़ा रहे थे। रास्ते में आने-जाने वाले कुछ अजनबी लोग सुनहरी को देखकर मुस्कराए। सुनहरी पहले मुस्कराई फिर मन ही मन सोचने लगी कि ये सब उसे देखकर मुस्करा क्यों रहे थे? इसी बीच आगे बढ़ते हुए सुनहरी को कपड़े की दुकान में वही पार्क वाली लड़की मिली... पार्क वाली लड़की— तुम्हारे पास ये अजीब-सी चीज़ (कुर्सी की तरफ़ इशारा करते हुए) क्या है? सुनहरी— ये तो बस...(सुनहरी का जवाब बीच में ही अधूरा रह जाता है) क्योंकि, बच्ची की माँ उसका हाथ पकड़कर उसे वहाँ से ले गई।

बच्ची (फ़रीदा) की माँ— इस तरह का सवाल नहीं पूछना चाहिए फ़रीदा... अच्छा नहीं लगता।

सुनहरी— मैं दूसरे बच्चों से अलग नहीं हूँ (सुनहरी... दुखी होते हुए बोली) मुझे अच्छा लगा कि आपकी बेटी ने मेरी पहिया कुर्सी में दिलचस्पी दिखाई, ऐसा कहकर सुनहरी आगे बढ़ी और अपनी पहिया कुर्सी के सहारे बाज़ार पहुँची। सुनहरी बाज़ार में सीढ़ियों के पास खड़ी सोच रही थी कि किस से मदद के लिए कहे क्योंकि सीढ़ियों के पास रैंप नहीं था और... आसपास के सभी लोग बेहद व्यस्त थे, और किसी का ध्यान सुनहरी की तरफ़ नहीं गया।

छोटू (पार्क वाला बच्चा)— मेरा नाम अमित है... क्या मैं तुम्हारी मदद करूँ?

सुनहरी— मेरा नाम सुनहरी है... (मुस्कराते हुए) पीछे वाले पैडिल को पैर से ज़रा दबाओगे?

अमित— हाँ-हाँ ज़रूर (ये कहते हुए अमित ने सुनहरी की पहिया कुर्सी सीढ़ियों से ऊपर चढ़ा दी)।

सुनहरी— धन्यवाद, अब मैं दुकान के अंदर अपनी मदद से खुद पहुँच सकती हूँ अमित उसके साथ अंदर आ जाता है।

दुकान में जाकर सुनहरी बोलती है— नमस्ते अंकल, एक किलो चीनी दे दीजिए।

दुकानदार मुस्कराते हुए चीनी की थैली उसकी तरफ़ आगे बढ़ाता है लेकिन जैसे ही सुनहरी चीनी की थैली पकड़ने के लिए हाथ आगे बढ़ाती है... दुकानदार थैली उसकी गोद में रख देता है। सुनहरी को बहुत गुस्सा आता है और वह कहती है— मैं भी दूसरों की तरह अपने-आप सामान ले सकती हूँ।

इसके बाद सुनहरी ने एक शरबत की बोतल भी ली, चीनी और शरबत लेकर सुनहरी और अमित दुकान से बाहर निकलते हैं।

इसके बाद सुनहरी अमित के साथ अपनी पहिया कुर्सी की मदद से दुकान से बाहर आई और सीढ़ियाँ उतरने में सुनहरी को एक बार फिर अमित की मदद लेनी पड़ी, सुनहरी को आलू भी लेने थे। इसलिए वह सब्जी के ठेले पर रुकी और दो किलो आलू भी खरीदे... एक बार फिर सुनहरी को गुस्सा आया... क्योंकि सब्जी वाले भईया ने आलू का थैला उसके हाथों में देने के बजाय उसकी कुर्सी के पीछे खड़े अमित को पकड़ाना चाहा...।

सुनहरी— मैं अपना सामान खुद पकड़ सकती हूँ (सुनहरी ने कुछ रोष के साथ कहा)।

इसके बाद सुनहरी ने आलू के पैसे दिए और अमित से बात करती हुई घर की तरफ़ आगे बढ़ गई।

सुनहरी— लोग मेरे साथ ऐसा व्यवहार करते हैं, जैसे मैं कोई अजीबो-गरीब लड़की हूँ।

अमित— शायद तुम्हारी पहिया कुर्सी के कारण ही वे ऐसा व्यवहार करते हैं।

सुनहरी— पर इस कुर्सी में ऐसा क्या खास है, मैं तो बचपन से इसका उपयोग करती हूँ।

अमित— तुम इस पर क्यों बैठती हो?

सुनहरी— मैं पैरों से चल ही नहीं सकती। इस पहिया कुर्सी के पहियों को घुमाकर ही मैं चल-फिर पाती हूँ लेकिन फिर भी मैं दूसरे बच्चों से अलग नहीं हूँ। मैं वे सारे काम कर सकती हूँ जो दूसरे बच्चे कर सकते हैं।

अमित— मैं भी उस तरह के सारे काम कर सकता हूँ जो दूसरे बच्चे कर सकते हैं, पर मैं भी दूसरे बच्चों से अलग हूँ... इसी तरह तुम भी अलग हो।

सुनहरी— नहीं, हम दोनों दूसरे बच्चों जैसे ही हैं।

अमित— देखो तुम पहिया कुर्सी पर बैठकर चलती हो, मेरा कद बहुत छोटा है...हम दोनों ही बाकी लोगों से कुछ अलग हैं।

बाज़ार से लौटते समय फिर उन दोनों को लोगों ने देखा...पर इस बार सुनहरी और अमित बेपरवाह खुशी-खुशी आगे बढ़ते गए...और इस बार उनके साथ फ़रीदा भी दौड़ी।

कहानी की नायिका यानि सुनहरी जब खुशी-खुशी, बेपरवाह बाज़ार से लौटती है, तो जो संदेश मिलता है, उसमें आपके-हमारे लिए समझने वाली बात यह है, कि आखिर क्यों न हम एक सार्थक प्रयास करें... थोड़े अलग से लगने वाले अपने इन साथियों को समझने का जो बिल्कुल वैसा ही भाव और संवेदनाएँ रखते हैं, जैसे कि आप और मैं। हमें बस यह करना है कि निगाहें भिन्नता पर न रखें बल्कि हमें उनकी आवश्यकताओं पर ध्यान देना है। उदाहरण के लिए, अगर सीढ़ियों के साथ रैम्प बना होता, तो सुनहरी बिना किसी की सहायता के बाज़ार का सारा काम खुद कर सकती थी।

चलिए, शिक्षक होने के नाते निगाहें घुमाते हैं अपने आसपास, कक्षा में विद्यालय के भीतर एवं बाहर, और पहचानते हैं उन बाधाओं को जो सुनहरी को स्वतंत्र रूप से विद्यालय एवं कक्षा में प्रतिभागिता करने से रोकती है। शुरुआत करते हैं विद्यालय के बाहर से—

विद्यालय में प्रवेश करने से पहले की सुविधा

- क्या विद्यालय तक आने वाली सड़क पहिया कुर्सी के लिए सुविधाजनक है?
- क्या फुटपाथ, यदि हैं तो विद्यालय की सड़क तक पहिया कुर्सी आसानी से आ-जा सकती है?
- क्या विद्यालय के गेट से पहिया कुर्सी कक्षा तक जाने की कोई सुविधाजनक व्यवस्था है?

विद्यालय के अंदर की व्यवस्था

- क्या सुनहरी विद्यालय में प्रवेश करने के बाद बिना किसी की सहायता के अपनी कक्षा तक जा सकती है?
- क्या विद्यालय के अंदर सभी जगहों तक पहिया कुर्सी पर बैठकर स्वतंत्र रूप से बिना किसी की मदद के पहुँचा जा सकता है?
- सुनहरी जब विद्यालय का शौचालय प्रयोग करेगी, तो क्या उसे किसी की मदद लेनी पड़ेगी?
- विद्यालय के (प्ले ग्राउंड) क्रीड़ा प्रांगण में सुनहरी जैसे बच्चों के लिए भी क्या किसी प्रकार के खेल की कोई व्यवस्था है?
- विज्ञान की प्रयोगशाला में क्या इस प्रकार की व्यवस्था है कि वह अपनी पहिया कुर्सी में बैठे-बैठे प्रयोग में शामिल हो सके?
- क्या सुनहरी पुस्तकालय में बिना किसी की सहायता के न केवल पहुँच सकती है, बल्कि हर एक शेल्फ़/किताब तक भी उसकी पहुँच संभव है?
- प्रिंसिपल के कमरे, स्टाफ़ रूम एवं सभागार आदि तक क्या सुनहरी बिना किसी की सहायता के जा सकती है?

उपर्युक्त सभी बातों पर ध्यान देने की ज़रूरत है, साथ ही इस बात पर भी हमें ध्यान देने की आवश्यकता है कि विद्यालय के शिक्षक, कर्मचारी, सहायक कर्मचारी इत्यादि सभी संवेदनशीलता के साथ न केवल सुनहरी और उसके जैसे अन्य बच्चों बल्कि उनके अभिभावकों से भी संवेदनशीलता से पेश आएँ। सब मिलकर ऐसा माहौल बनाएँ कि कक्षा एवं विद्यालय के अन्य छात्रों के मन में भी अपनत्व और संवेदनशीलता के भाव पैदा करें, क्योंकि बहुत-सी बातें

सिर्फ किताबी ज्ञान द्वारा पढ़ाई नहीं जा सकती, बल्कि उसको मानवीयता के साथ पूरे दिल से अपने व्यवहार में उतारना बहुत आवश्यक है। सुनहरी और उसके जैसे ऐसे कितने लोग हैं जो जीवन में आगे तो बढ़ना चाहते हैं, लेकिन सुविधाओं की कमी और अपनों के प्रोत्साहन के बिना इन्हें न केवल निराश होना पड़ता है, बल्कि बहुत-सी दिक्कतों का सामना भी करना पड़ता है। इतनी सारी इफ़्रास्ट्रक्चर की सुविधाओं के अलावा सबसे महत्वपूर्ण बात आपके और हमारे नज़रिये की है, क्योंकि संसाधनों की सुविधा जितनी आवश्यक है, उससे कहीं ज़्यादा ज़रूरत हमारे इन साथियों को हमारे स्नेहिल साथ और समर्थन की है। हाँ, इतना ज़रूर ध्यान देने की बात है, ...कि इन्हें बराबर का अधिकार चाहिए न कि दया का, इन्हें तदानुभूति चाहिए न कि दया व करुणा भरा व्यवहार।

जब तक हम अपने नज़रिये में बदलाव नहीं करेंगे ...तब तक नज़ारा बदलने की उम्मीद कैसे कर सकते हैं?

इसी संदर्भ में शिक्षकों के लिए कुछ व्यवहारात्मक बिंदु नीचे दिए गए हैं, जो बदले नज़रिये के कारण नज़ारा बदलने में लाभदायक सिद्ध हो सकते हैं।

शिक्षकों के लिए

- सभी की योग्यता में विश्वास रखें। भरोसा करें, सभी सीखने की क्षमता रखते हैं, फिर चाहे वह पैरों से चलने में सक्षम हों या फिर पहियाकुर्सी की सहायता से चलते हों।
- सीखना-सिखाने को सुगम्य बनाने के लिए भौतिक संसाधनों से पहले मनोवृत्ति में बदलाव आवश्यक है। यदि मनोवृत्ति सकारात्मक है तो

उपलब्ध संसाधनों एवं सुविधाओं में न्यूनतम बदलाव भी बेहद प्रभावी सिद्ध हो सकते हैं।

- यदि पहियाकुर्सी के आवागमन के अनुसार दरवाज़ा उचित रूप से चौड़ा नहीं है तो स्थायी समाधान के अभाव में अस्थायी हल या विकल्प ढूँढ़ने की आवश्यकता है। किसी भी हालत में गैर-समावेशन या अलग छोड़ देना स्वीकार्य हल नहीं हो सकता है।
- कक्षा के सभी विद्यार्थियों को विशेष आवश्यकता के संदर्भ में संवेदनशील बनाना चाहिए। संवेदनशील बनाने का अर्थ है, चिढ़ाने, मज़ाक उड़ाने या अनदेखी करने के व्यवहार से बचना; विशेष आवश्यकता वाले सहपाठी की खूबियों को पहचानना; खेलकूद सहित सभी गतिविधियों में सभी की भागीदारी का प्रयास करना; और यथासंभव पारस्परिक सहयोग एवं साझेदारी से कार्य करना।
- प्रत्येक में कोई न कोई विशेषगुण अथवा खूबी होती है, कक्षा में विद्यार्थियों को एक-दूसरे की अच्छाई या गुणों पर ध्यान देने के लिए प्रेरित करना।

निष्कर्ष

बहुत बार हम चीज़ों या परिस्थितियों को केवल अपने नज़रिये से देखते हैं, और सामने वाले का नज़रिया समझने की कोशिश भी नहीं करते। लेकिन समाज की हर कड़ी को साथ लेकर आगे बढ़ने के लिए ये बहुत आवश्यक है, कि हम हर दृष्टिकोण से किसी भी स्थिति...परिस्थिति का आकलन करें और बारीकी से हर एक पहलू को आत्मसात भी करें।

संदर्भ

- आर.टी.ई. 2009. शिक्षा का अधिकार अधिनियम 2009. मानव संसाधन विकास मंत्रालय, नयी दिल्ली.
- आर.पी.डब्ल्यू.डी. 2016. दिव्यांगजन अधिकार अधिनियम 2016. भारत का राजपत्र 2016. भारत सरकार, नयी दिल्ली.
- एन.ई.पी. 2020. राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020. शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार, नयी दिल्ली.
- पी.डब्ल्यू.डी. 1995. दिव्यांगजन (समान अवसर, अधिकारों का संरक्षण और पूर्ण भागीदारी) अधिनियम 1995. भारत का राजपत्र 1995. भारत सरकार, नयी दिल्ली.